Unmilan
(UGC Care Journal)
ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-06
June-2020

पत्रिका का नया 'नीश' चेहराः निरोगधाम

डॉ. सोनाली नरगून्दे
एसोसिएट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला,देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
डॉ. मनीष काले
अतिथि व्याख्याता, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला,देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

सारांक्ष
भारत सहित दुनिया भर में पत्रिकाओं का जो रूझान दिख रहा है, उससे तो स्पष्ट है कि सामान्य विषय पर निकलने वाली पत्रिकाओं का तो भविष्य ज्यादा अच्छा नहीं है। ऐसे कई उदाहरण है जिससे स्पष्ट हो जाता है कि सामान्य विषय की पत्रिकाओं को पाठक नकार रहे है। धर्मयुद्ध, साप्ताहिक हिंदुस्तान, रविवार, दिनमान जैसी पत्रिकाएं भी खुद को स्थापित नहीं कर पायी। इंडिया टुडे, आउट लुक और वीक जैसी चुनिंदा पत्रिकाओं को छोडकर बात करें तो सामान्य विषयों पर निकलने वाली पत्रिकाओं पर संकट के बादल छाये हुए है। इन सबसे बीच बाजार में जो पत्रिकाएं चल रही है, वे सभी एक खास विषय विशेष पर फोकस होती है और विशेष पाठकों के लिये ही निकाली जाती है। एक खास पाठक समूह को लक्षित कर निकलने वाली पत्रिकाएं यानी नीश पत्रिकाएं जरूर चलती रहेगी और इनका भविष्य भी अच्छा है। इन पत्रिकाओं का बाजार भी है और भविष्य भी। ऐसी ही एक पत्रिका मध्यप्रदेश के इंदौर से प्रकाशित हो रही है, जो स्वास्थ विषय पर केद्रिंत है। 'निरोगधाम' नाम से निकलने वाली यह पत्रिका बाजार में सालों बाद भी टिकी हुई है। शोध पत्र में निरोगधाम की प्रबंधन और नीतियों पर प्रकाश डाला गया है।

मूल शब्द– पत्रिका, प्रबंधन, विषय विशेष, बाजार, पाठक, नीतियां।

प्रस्तावना

पत्रिकाओं का संचार बहुआयामी होता है और पत्रिकाओं का एक पक्ष उजला है। इकानॉमिस्ट पत्रिका इसका बड़ा उदाहरण है, जिसका अपना बाजार भी है और पाठक भी। बुक स्टॉल पर आपको सामान्य विषय की पत्रिकाएं कम मिलेगी लेकिन युवा, खेल, पर्यटन, फिल्म, ड्रायविंग, बच्चों के पालन–पोषण, फैशन जैसे विशेष विषयों पर कई पत्रिकाएं मिल जाएगी। इन पत्रिकाओं को अपने विशेष विषय के पाठक भी मिल जाते है और विज्ञापनदाता भी। ऐसे में आर्थिक तंगी का सामना इन पत्रिकाओं को कम करना पढ़ता है और ये उनका बिजनेस माडल भी बन जाता है। 'निरोगधाम' पत्रिका की बात करें तो उसका भी अपना बिजनेस माडल है और सालों से यह पाठकों की पसंद बनी हुयी है। आयुर्वेद चिकित्सा पद्धिति को आम लोगों तक पहुंचाना के उद्देश्य से निरोगधाम पत्रिका का प्रकाशन किया गया था।

1 फरवरी 1979 को निरोगधाम आरंभ हुयी। आयुर्वेद के डाक्टर प्रेमदत्त पाण्डेय पत्रिका के प्रबंध सम्पादक थे। शारीरिक, आध्यात्मिक और मानसिक शांति और विकास जैसे विषय संस्थापक श्री पाण्डेय के चर्चा के मुख्य विषय हुआ करते थे। आयुर्वेद के डाक्टर होने के कारण दवाईयों से पुराना नाता था ही। डॉ. पाण्डेय चाहते थे कि आयुर्वेद की चमत्कारी औषधियों का लाभ आम आदमी को मिलें और आने वाली नस्लों को भी इसका फायदा मिलें। इसके लिए आयुर्वेद का प्रचार–प्रसार जरूरी था। पत्रिका इसका एक सशक्त माध्यम था। आयुर्वेद को जन–जन तक पहुंचाने के लिए ही इस विषय वस्तु पर आधारित पत्रिका निकालने का निर्णय लिया गया था। प्रेमदत्त पाण्डेय ने सालों तक इसकी जिम्मेदारी संभाली। उनके जाने के बाद उनके ही पुत्र अशोक कुमार पाण्डेय ने इसकी जिम्मेदारी ली। करीब 41 सालों से यह पत्रिका प्रकाशित हो रही है।

स्वास्थ्य सामग्री प्रकाशित करने वाले विषय विशेष की पत्रिकाओं में निरोगधाम का अपना एक मुकाम है। खास बात यह है कि इसका कोई भी अंक पुराना नहीं होता है। महीनों नहीं सालों तक इसकी सामग्री न केवल पाठक संजोकर रखते है बल्कि इसका उपयोग भी दैनिक जीवन में किया जाता है। इतना ही नहीं इसके कई अंक इतने महत्वपूर्ण है कि सालों बाद भी ये खरीदे भी जाते है। निरोगधाम को लेकर यह कहा जा सकता है कि इसका हर अंक हमेशा जीवित रहता है। एक स्वास्थ्य मिशन के रूप में यह आज भी 60,000 से अधिक प्रसार संख्या के साथ पाठकों तक पहुंच रही है। निरोगधाम कीप्रसिद्धं का अंदाजा इसी से लगाजा जाता है, इसकी कॉपियों सालों तक के लिये बुक है। निरोगधाम की बिक्री बुक सेलरों के माध्यम से ही होती है लेकिन खास बात यह है कि पत्रिका प्रबंधन बुक सेलरों के पास नहीं पहुंचता है बल्कि बुल सेलर, पत्रिका प्रबंधन के

Copyright©authors

ISSN 0974-0053
Vol-23-Issue-06
June-2020

पास पहुंचकर अपनी कॉपियां बुक करता है। यानी बुक सेलर अपनी कॉपियाँ पहले से ही बुक करवा लेते है। ऑर्डर के अनुसार पैसा लेकर निरोगधाम उन्हें पहुंचा दी जाती है। हजारों पाठकों तक सीधे भी निरोगधाम पहुंचायी जाती है।

आम पत्रिकाएं जहां आर्थिक प्रबंधन नहीं कर पाने के कारण बंद हो गयी है या फिर बंद होने की कगार पर है। लेकिन निरोगधाम के साथ इसका उल्टा है, जो अपने आप में एक बड़ा माडल है। पत्रिका की प्रसार संख्या अधिक होने से आर्थिक प्रबंधन को लेकर कोई परेशानी नहीं आती है। कॉपियों की बिक्री के अलावा आयुर्वेद से जुड़ी दवाईयों के विज्ञापन भी बहुत आते है। विज्ञापनों की हालत यह है कि प्रबंधन को कई बार मना करना होता है। दरअसल निरोगधाम में प्रकाशित विज्ञापनों के आधार पर भी लोग दवाईयों की खरीदारी करते है। यही कारण है कि आयुर्वेद से जुड़ी दवा कंपनियां हर हाल में इस पत्रिका में विज्ञापन देना चाहती है। अन्य विज्ञापन नहीं लिए जाते है। सरकारी विज्ञापन भी प्रकाशित नहीं किया जाता है। खास बात यह हे कि निरोगधाम विज्ञापन के लिए अपनी कोई मार्केटिंग नहीं करता है। कंपनियां ही विज्ञापन देती है। आम आदमी के विश्वास पर भी निरोगधाम खरी उतरी है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री को अपनाकर हजारों लोगों ने अपनी बीमारी ठीक की है।

निरोगधाम ही एक मात्र पत्रिका है जिसकी प्रति सालों बाद भी बिक रही है। 1989 का नारी स्वास्थ्य, 1999 का योग भगाए रोग जैसे विशेषांक तो आज भी खरीदे जा रहे है। स्पष्ट है कि पत्रिका की सामग्री का प्रभाव पाठकों पर सीधे तौर पर है। लोग एक दिन पुराना समाचार पत्र नहीं खरीदते है, ऐसे में निरोगधाम सालों बाद भी खरीदी जा रही है। यही नहीं ऑनलाईन भी सालों पुराने अंक आज भी खरीदे जा रहे है।

शुरूआत में केवल फोकस पूरी तरह से चिकित्सा स्वास्थ्य पर ही है। आयुर्वेद के माध्यम से लोगों को एक स्वस्थ जीवन शैली देना इसका उद्देश्य था, लेकिन बाद में चिकित्सा विषय के साथ ही मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य से जुड़ी सामग्री का प्रकाशन भी किया जाने लगा।

''अंतःकरण के चार अंग है– मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त। विचार करना, मनन करना मन का काम है, विचार अच्छा है या बुरा, करने योग्य है ऐसा निर्णय करना बुद्धि का काम है। मैं हूं ऐसा आत्मभाव होना, ममत्व और अपने अस्तित्व का अनुभव करना अहंकार है। मन, बुद्धि और अहंकार से प्राप्त ज्ञान को धारण करने का साधन चित्त है। जिस पर सब संस्कार अंकित होते रहते है। इसका संबंध मुख्य रूप से जीवात्मा के साथ्ज्ञ और गौण रूप से मन, बुद्धि, अहंकार, सूक्ष्म प्राण और सब इंद्रियों के साथ रहता है। अंतर्मन के ये चारों अंग सात्विक, राजसिक या तामसिक गुण वाले या तीनों गुणों को मिले–जुले रूप में धारण करने वाले होते है। प्रकृति सत, रज और तम इन तीनों गुणों से युक्त होती है।''

चिकित्सा विषय से जुड़ी होने के कारण इसका पाठक वर्ग बड़ा है। हर वर्ग का वयस्क व्यक्ति इसका पाठक है। समय–समय पर निकलने वाले विशेषांक विशेष पाठक वर्ग का निर्माण भी करते है। जैसे युवाओं पर विशेषांक, महिलाओं पर विशेषांक आदि। अमरवाणी, लेख, हमारा अन्तर्मन, उत्तम औषधि, बोध कथा, डाक्टर की सलाह, आयुर्वेदिक समाधान, घरेलु नुस्खे, आध्यात्म, पत्र मित्र, आयुर्वेद पहली, रूप श्रृंगार, यौन विकार और समस्या, ज्योतिष, जरा रूकिये, जीवन प्रबंधन, अनुभूत योग इसके प्रमुख स्तंभ है। अधिकांश स्तंभ चिकित्सा से जुड़े होते है, जिसमें विशेषज्ञों द्वारा उपचार बताया जाता है। अधिकांश सामग्री चिकित्सा आधारित ही होती है, लेकिन कई ऐसे स्तंभ भी है जो पाठकों को आध्यात्मिक और व्यक्तिगत विकास के लिये होते है।

चिकित्सा आधारित पत्रिका होने के बाद भी इसमें बोध कथा जैसे स्तंभ भी है, जो पाठकों को सीख देने के उद्देश्य से लिये जाते है। '' झूठ बोलने से अपनी याददाश्त कमजोर होती है, अपना सम्मान नष्ट होता है, दूसरों की नजर में हमारी बात अविश्वसनीय हो जाती है, एक झूठ को छुपाने और साधने के लिये हमें और भी झूठ बोलना पड़ते है। इस प्रकार झूठ के दुष्चक्र में फंस कर हम कुंठा, आंशका और तनावपूर्ण मनःस्थिति के शिकार हो जाते है जिससे मानसिक और शारीरिक विकार उत्पन्न होने लगते हैं इसलिये झूठ नहीं बोलना चाहिये। आप कहेंगे झूठ बोले बिना काम भी तो नहीं चलते। हम कह रहे है कि ऐसा काम चल भी जाए तो शुम फलदायी नहीं होता। झूठ पर टिका काम न तो सच्चा होगा, न ही अच्छा, बल्कि वह हमारे मन में अपराध बोध को जन्म देगा और धीरे–धीरे हमारे मनोवृत्ति ही अपराधी हो जाएगी।''

पत्रिका में जीवन प्रबंधन पर आधारित आलेख भी प्रकाशित किये जाते है तो तन के साथ ही जीवन को एक दिशा देने का काम करते है। ''अहंकार एक ऐसा ही आयटम है, जिसके भीतर प्रवेश कर जाता है बाकि लोगों, देश, समाज, अपने और अपनेपन के प्रति उसकी दृष्टि ही बदल देता है। अहंकार की रूचि दिखावे में

Copyright©authors

होती है। अहंकारी को पूरा प्रयास प्रदर्शन में होता है। प्रशंसा का भोजन न मिले तो उसके लिये भुखमरी की स्थिति पैदा हो जाती है। फिर ऐसे लोगों को समाज भी बदली दृष्टि और असहयोग की भावना से ही देखने लगता है। प्रतिभा का प्रदर्शन किये जाने में कोई बड़ी बुराई भी नहीं है। बस, तरीका थोड़ा और इस बात की समझ होना चाहिये कि योग्यता मनुष्य के लिये जूगनु और सूरज दोनों के समान काम कर सकती है। प्रतिभा में जूगनु सी चमक हो तो अहंकार पैदा होगा और यदि सूर्य सा प्रकाश हो तो उसका निरहंकारी स्वरूप ही सामने आएगा।''

समाज के प्रति जिम्मदारी निभाते हुए पत्रिका लोगों को प्रोत्साहित करने वाले लेख भी प्रकाशित करती है। '' सीनियर सिटीजन पंचायत की कमान संभाल रहे एसपी डॉ. प्रशांत चौबे ने बताया कि रोजमर्रा के काम करने पर शहर के सीनियर सिटीजन पुलिस और नगर सुरक्षा समिति के सदस्यों को बेटे की तरह मानने लगे है। 60 से ज्यादा ऐसे सीनियर सिटीजन है जो शारीरिक रूप में असक्षम है। हमारे सदस्य उनके पास पहुंचते है और हौंसला बढ़ाते है। कुछ तो रो पड़ते है और कुछ नई उर्जा के साथ बातचीत कर खुद को स्वस्थ महसूस कर गले लगा लेते है।''

चिकित्सा विषय से जुड़ी पत्रिका होने के कारण पाठक की रूचि का सवाल कम होता है। प्रबंधन यह देखते है कि पाठकों को किस बीमारी की जानकारी देना उस समय आवश्यक है। उसी के आधार पर अधिकांश सामग्री का चयन किया जाता है। कुछ सामग्री का चयन पाठक की रूचि के अनुसार किया जाता है। खास तथ्य यह भी है कि निरोगधाम में छपकर कई बंद हो चुकी स्वास्थ्य पत्रिकाएं फिर से शुरू हो पायी है। एक बड़ा उदाहरण लसुहन बादशाह नामक पत्रिका से जुड़ा हुआ हे। इस पत्रिका के बंद होने के बाद निरोगधाम में इसके अंश छापे जाते थे। इसका प्रभाव यह हुआ कि लोगों को लसुहन बादशाह के बारे में पता चला और इतनी मांग बढ़ी की इसे फिर से प्रकाशित करना पड़ी। करीब 20 सालों बाद यह पत्रिका फिर से शुरू की गई।

पत्रिका के सम्पादक अशोग पाण्डेय का कहना है कि पत्रिकाओं को तेजी से बदल रहे इलेक्ट्रानिक माध्यमों का सहारा लेना होगा। यह सबसे बड़ी चुनौती है। केवल मुद्रित पत्रिका को लेकर यदि हम चलते है तो भविष्य की दिशा तय नहीं हो सकती है। युवाओं के रूझान को देखते हुए हमें मुद्रित पत्रिकाओं को इंटरनेट पर भी ले जाना होगा। निरोगधाम ने यह पहले ही कर रखा है। हम इंटरनेट पर भी उपलब्ध है, लेकिन निःशुल्क नहीं। पाठक को निरोगधाम की प्रति खरीदना है तो वह 40 रूपए जमा कर इंटरनेट से डाउनलोड कर सकता है। पाठकों को हमारी सामग्री पसंद आती है और वह इंटरनेट से हमारी कॉपी खरीदता भी है। मुद्रित कॉपी भी 40 रूपए में हम बेचते है और इंटरनेट पर भी यह इसी मूल्य पर उपलब्ध है। इतना ही नहीं हम निःशुल्क सामग्री भी पाठकों को उपलब्ध कराते है, जिसकी अलग से साइट है। दूसरी बड़ी चुनौती युवाओं के दिमाग को अपनी तरफ मोड़ना है। आज का युवा एक मिनिट मे अपनी राय बना लेता है। यदि आप उसे उसकी पसंद की सामग्री नहीं दे पाते है तो वह आपको नकारने में ज्यादा समय नहीं लेता है। एक बार यदि उसने आपको नापसंद कर दिया तो फिर उसकी नजर में चढ़ना मुश्किल होता है। ऐस में युवाओं की मानसिकता को देखते हुए ऐसी ही सामग्री प्रकाशित की जानी चाहिए जो पाठकों को सत्य जानकारी होने का भरोसा दिला सके। सत्य जानकारी नहीं होने के अभाव में पत्रिकाओ के भविष्य पर सवाल खड़े हो रहे है। यदि पाठक को पत्रिका में विश्वसनीय सामग्री नहीं मिलती है तो वह उसे सिरे से नकार देगा।

ऐसे समय में जब पत्रिकाएं बंद हो रही है, निरोगधाम ने यह सिद्धकर दिया किया कि सामग्री अच्छी है तो पत्रिका किसी भी हाल में पाठक पसंद करता है। आज भी अच्छी सामग्री, साहित्य की जरूरत समाज को है और पढ़ने वालों की कमी भी नही है। निरोगधाम पत्रिका ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि पत्रिकाओं को लेकर जब बाजार पूरी तरह निराशाओं से भरा है, विशेष विषय की पत्रिकाएं बाजार में घूम मचा रही है। निरोगधाम अन्य पत्रिकाओं के लिये एक आशा की किरण है।

संदर्भ

– बोकिल, ए., (2018). टाइम मैगजीन का बिकना और सूचना को ज्ञान में बदलना. ऑचलिक पत्रकार. भोपाल.

– '' मैगजीन जर्नलिस्म के भविष्य पर विशेषज्ञों ने जताया भरोसा''(2017). मूल्यानुगत मीडिया. वर्ष 10.अंक9. पेज 9.

–– डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू. निरोगधाम. इन.